दो शब्द

स्व० बदरी नारायण सिन्हाकी इस काव्य-पुस्तिका पर सम्मति लिखते हुए मुझे आन्तरिक प्रसन्नता का बोध हो रहा है। स्वर्गीय सिन्हा बिहार के लब्ध प्रतिष्ठ साहित्यकारों में रहे हैं और उनकी रचनाओं विशेषतः काव्य कृतियों से लोगों का पर्याप्त परिचय रहा है। अपराध साहित्य पर भी उन्होंने सराहनीय कार्य किया और उनके बहुचर्चित ग्रन्थ 'आपराधिकी' को सामान्य एवं विशेष दोनों वर्गों के पाठकों में पर्याप्त ख्याति प्राप्त हुई थी तथा कई राज्य सरकारों ने उसे पुरस्कृत भी किया था। श्री सिन्हा से मेरा व्यक्तिगत परिचय भी था और उनकी साहित्यिक सूझ-बूझ का मैं कायल था।

इस पुस्तक के द्वारा बदरी बाबू के व्यक्तित्व के एक नये आयाम से मेरा परिचय हुआ है। मुझे यह देखकर सुखद आश्चर्य हो रहा है कि स्वर्गीय सिन्हा मंजे हुए गद्यकार तो थे ही, उनकी काव्यात्मक प्रतिभा भी अत्यन्त उच्च कोटि की थी।

इस छोटी पुस्तक में सचमुच में गागर में सागर भरने का प्रयास किया गया है। मात्र कुछ पृष्ठों में ही न केवल छन्द और प्रयोगगत विविधता उपलब्ध है बल्कि विषयगत विविधता भी आश्चर्य में डालती है। एक ही स्थान पर दर्शन, व्यंग्य, क्रांति, प्रगतिवाद और आस्था-अनास्था आदि का ऐसा संगम उपलब्ध होता है कि कवि की प्रतिभा के प्रति नत-मस्तक हुए बिना नहीं रहा जाता। मुझे इस बात का अधिक सुख है कि कवि ने कहीं-कहीं सर्वथा नई और क्रांतिकारी स्थापनाएं प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है। आधुनिक जीवन की अन्य विसंगतियों को भी कवि ने सफलता-पूर्वक रेखांकित किया है।

कवि की सारी भावुकता और अतिरिक्त संवेदनशीलता के बावजूद यह स्पष्ट है कि उसकी प्रमुख विधा प्रगतिवाद है और शोषण के विविध प्रकारों को उसने अपने सशक्त आक्रमण का लक्ष्य बनाया है। चाहे वह मजदूर हो या कृषक, शिक्षक हो या लिपिक, कवि की सहानुभूति उसे समान रूप से उपलब्ध होती है और उनके दैन्य और विवशता के चित्रण में वह कुछ भी उठा नहीं रखता। श्रमिकों के प्रति तो वह अपने को सर्वथा समर्पित ही कर देता है।

मैं कवि की इस कृति का स्वागत करता हूँ और उनकी सफलता की कामना।

राजेन्द्र अवस्थी
संपादक, कादम्बिनी, नई दिल्ली

मूल्य—बीस रुपये

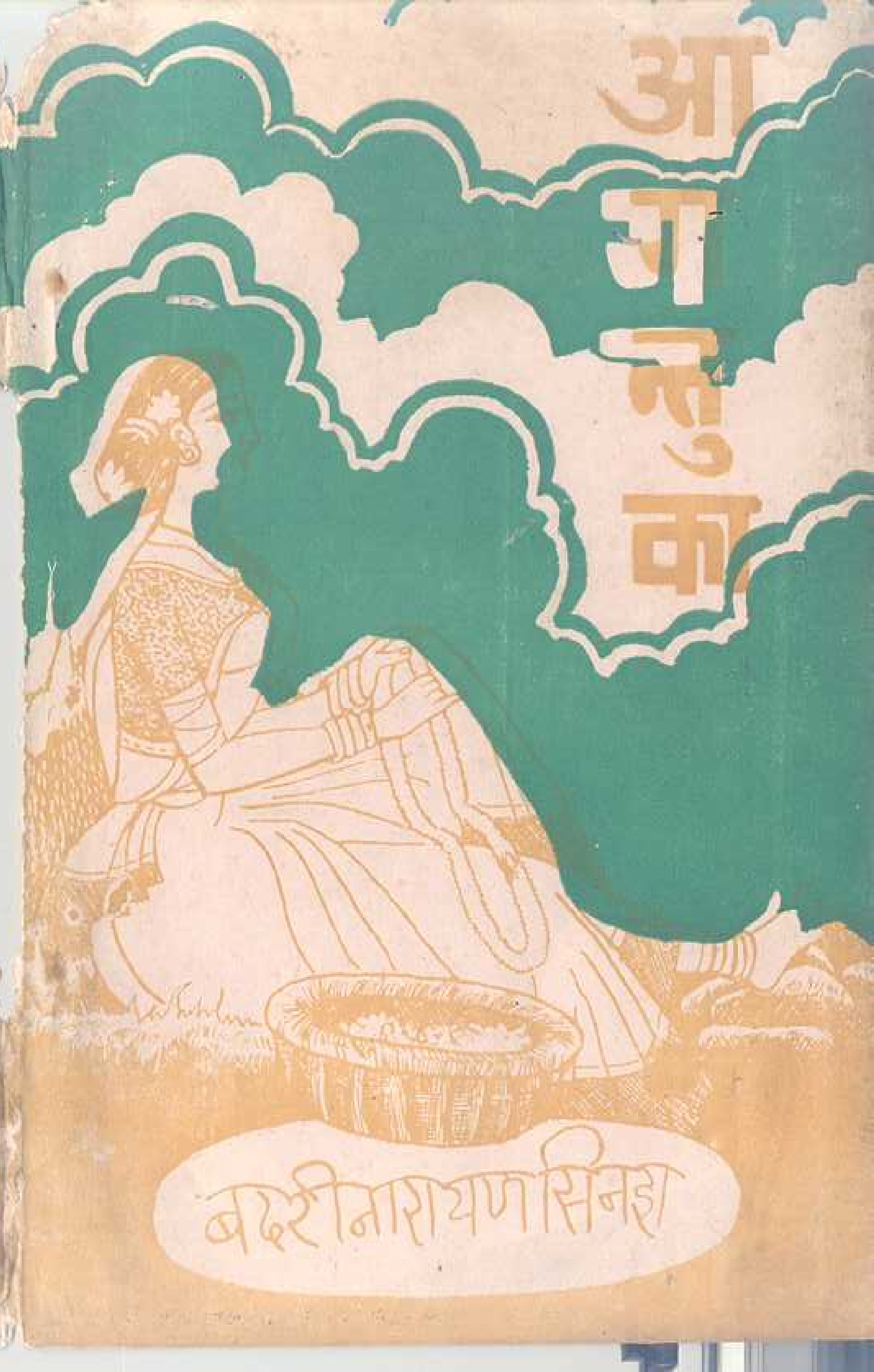

आ
ग
न्तु
का

बद्री नारायण सिन्हा

श्रीमती इंदु प्रभा सिन्हा

प्रथम संस्करण : १५ अगस्त, १९८४

मूल्य : बीस रुपये

आवरण-सज्जा : श्री विमलेंदु सरकार

प्रकाशक :–

श्री आनन्दवर्द्धन सिन्हा, भा० प्र० से०
श्री गणपत प्रकाशन
बोरिंग कनाल रोड,
पटना-८००००१

मुद्रक :–
'सरस्वज्योति' प्रेस
श्री कृष्णापुरी
पटना-८००००१

अपने पूज्य पितामह (दादा)
स्व० श्री बम बहादुर लाल वर्मा
एवं
पितामही (दादी) स्व० श्रीमती परेखन देवी
की पुण्य स्मृति को

पटना
१५ अगस्त, १९८४

(आनन्दवर्द्धन सिन्हा)

"आगंतुका" कविताओं का संग्रह, अपनी विविधता एवं प्रबल बौद्धिकता के कारण सहज ही हिन्दी काव्य लेखन में अपनी अलग प्रतिमान बनाती है। प्राक्कथन, वंदन, निरूगण आदि कविताएं प्रयोग एवं शब्द विन्यास की दृष्टि में उत्तर-छायावादी गीत रचना की याद दिलाती है। "अवतरण" "अभिनन्दन" आदि कविताओं में कोमल भावनाओं के साथ साथ हृदय के चिरंतन आग की अभिव्यक्ति मिलती है। ये कविताएँ अपनी क्रांतिकारी स्वर के लिए याद की जायेंगी।

साहित्यसेवी स्व० बदरी बाबू के वैयक्तिक एवं साहित्यिक जीवन को मैंने निकट से देखा है। अतः मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि वह जो थे वही लिखते थे। उन्होने महाकवि निराला की भाँति कुछ सजीव चित्रात्मक कविताएँ जैसे "अंकन" "लिपिक" एवं "मजदूर" लिखने का प्रयास किया है।

अप्रकाशित "आगंतुका" को प्रकाशित कराकर पिता तुल्य पुत्र श्री आनन्दवर्द्धन ने एक सराहनीय कार्य किया है।

(जियालाल आर्य)
भा० प्र० से०
आयुक्त, कोशी प्रमंडल
सहरसा

स्वर्गीय श्री बदरीनारायण सिन्हा के कविता संग्रह 'आगंतुका' पर दो शब्द लिखते हुये मुझे प्रसन्नता हो रही है। "आगंतुका" की अधिकांश रचनाएँ मैं पढ़ गया हूँ कि आज के युग की विसंगतियों पर जितनी तीखी प्रतिक्रिया कवि ने व्यक्त की है वह अपनी साफगोई के कारण और अधिक प्रभावशाली बन पड़ी है। इनकी रचनाओं में विक्षोभ है युग की अराजकता के प्रति और समाजवाद के खोखलेपन के प्रति।

ये पंक्तियां इस प्रसंग में द्रष्टव्य है —

महल के बगल में बिछे डगर पर
मैले कुचैले बस पसलियाँ भर
धराओं पर जुटे जो नारी-नर
अधखिली चूर्णी निज देह लेकर

जन्तु सरीखे विस्मय दिखाकर
अवसाद हेतु नियति दोष देकर
न हमें, न तुम्हें अपशब्द कहकर,
होंते खुद को समय की रेत पर

वह चीत्कार शून्य से टकरा रही है
चीत्कार कण में दर्द बिखरा रही है
चलो साथियों भैरवी जगा रही है
रूधिर की बेचैनी खलबला रही है

जीवन की वास्तविकता का व्यंग्यात्मक वर्णन उनके यथार्थ-वाद के कलात्मक रंग को निखारता है। कवि के दृष्टिकोण के विकास का एक महत्वपूर्ण तत्व यह है कि वह समाज की वर्ग रचना, संघर्ष, मेहनतकशों की अग्रणी भूमिका और शोषकों की स्वार्थपरता को समझने लगे थे। अपनी उबलती-उफनती भावनाओं को कविता के रूप में ढालकर स्व० बदरी बाबू ने साहित्य भंडार की श्रीवृद्धि की है। आशा है, पाठकों को यह कविता-संग्रह पसंद आयेगा।

दिवंगत आत्मा को मेरी भावांजलि।

बैकुण्ठनाथ ठाकुर
निदेशक बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी
पटना

आभार

मारवाड़ी महाविद्यालय, भागलपुर के प्राचार्य एवं हिन्दी जगत में एक सुप्रसिद्ध हस्ताक्षर डॉ० विष्णु किशोर झा "बेचन" के प्रति इस पुस्तक का "आमुख" लिखने के लिए मैं अपने अन्त: करण से ऋणी हूँ। वे मेरे पिता के बहुत ही निकट थे एवं जैसा कि इन्होंने स्वयं उल्लेख किया है–उनके "साहित्यिक सहयात्री थे। मैं श्री जियालाल आर्य, भा0 प्र0 से0, आयुक्त, कोशी प्रमंडल, सहरसा जो हिन्दी के एक जाने-माने सेवक हैं के प्रति इस पुस्तक पर मंतव्य देने के लिए अपना उद्गार व्यक्त करता हूँ। मैं श्री वैकुण्ठ नाथ ठाकुर, निदेशक, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना को भी इस पुस्तक के संबंध में अभिमत व्यक्त करने के लिए हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

पुस्तक के प्रकाशन एवं मुद्रण के संबंध में श्री पशुपति नाथ दत्त एवं श्री विनोद कुमार सिन्हा ने समय-समय पर परामर्श एवं सहयोग दिया है जिसके लिए मैं उनका आभारी हूँ।

प्रकाशन कार्य में मुझे अपनी माता एवं हिन्दी की कवयित्री श्रीमती इन्दु प्रभा सिन्हा, एम0 ए0 से समय-समय पर बहुमूल्य मार्ग दर्शन प्राप्त हुआ। इस कार्य में अपनी बहन कुमारी जयश्री सिन्हा, एम0 ए0 एवं अपने अनुज श्री अम्बर सिन्हा से भी अत्यधिक सहायता प्राप्त हुई है जिसके लिए वे प्रशंसा के पात्र हैं। प्रकाशन कार्य में प्रोत्साहन देने के लिए मैं परिवार के अन्य सदस्यों तथा मित्रों का भी कृतज्ञ हूँ।

पुस्तक की आवरण-सज्जा के शिल्पी श्री विमलेन्दु सरकार को मैं सुरुचीपूर्ण चित्रांकन के लिए हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। "सरस्वज्योति" मुद्रणालय के व्यवस्थापक एवं कर्मचारियों के अथक परिश्रम के पश्चात इस पुस्तक ने अपना वर्तमान स्वरूप ग्रहण किया है जिसके लिए इन्हें मेरा आभार एवं धन्यवाद देय है।

(आनन्दवर्द्धन सिन्हा)

श्री गणपत सदन,
बोरिंग कनाल रोड,
पटना-८००००१,
स्वतंत्रता दिवस, १९८४।

प्रकाशकीय

अपने साहित्यानुरागी पिता स्वर्गीय श्री बदरी नारायण सिनहा की यह काव्य-कृति "आगन्तुका" सम्माननीय एवं प्रबुद्ध पाठक समुदाय के समक्ष श्रद्धा एवं विनम्रता परन्तु साथ-ही-साथ आस्था एवं विश्वास के साथ प्रस्तुत करने में मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। इस कविता-संग्रह में शाश्वत मूल्यों एवं ज्वलन्त समस्याओं को समेकित रुप से उपस्थापित करने का प्रयत्न किया गया है। कविता धारणाओं एवं भावनाओं की सरस एवं सुगम अभिव्यक्ति होती है। प्रत्येक काव्य में एक संदेश होता है। किसी भी कवि की सफलता अपने संदेश के सशक्त सम्प्रेषण में निहित है। इस पुस्तक में कवि ने अपने अन्तरंग भावों एवं अनुभूत विचारों का सटीक एवं रुचिकर चित्रण करने का प्रयास किया है।

इन कविताओं का लेखन १९६६ में हुआ। निश्चित रूप से इन कविताओं पर उस समय की शैलियो एवं प्रयोगों का प्रभाव है। फिर भी एक अर्थ में हरेक कविता अपना एक स्वतंत्र अस्तित्व रखती है एवं यह भी सत्य है कि कविता में एक अंतर्दृष्टि रहती है जिसके चलते वह समय-काल की सीमाओं से ऊपर रहती है। इसका कारण यह है कि कवि का स्वर चेतना की गहराईयों से संबंध रखता है और मानव-चेतना में बहुत हद तक निरंतरता विद्यमान रहती है जिसके परिणामस्वरूप पूर्वरचित साहित्य की भी प्रासंगिकता एवं उपादेयता स्थापित रहती है।

काव्य में प्रवाह की शक्ति होती है। कितनी मात्रा में एक कविता विभिन्न परिवेशों एवं माध्यमों को स्वय में समेट लेती है यह ही उसकी सार्थकता का द्योतक है। इस संकलन में विभन्न विषयों को सम्मिलित करने से पुस्तक के समावेश क्षेत्र में वृद्धि ही हुई है। आशा है कि आदरणीय पाठकगण इन कविताओं को रोचक एवं हितकारी पायेंगे।

पटना
स्वतंत्रता दिवस, १९८४

आमुख

स्व० कविवर बदरी नारायण सिन्हा की कविताएं "आगन्तुका" को पुस्तकाकार देखकर हार्दिक प्रसन्नता हुई। उनके सुपुत्र श्री आनन्दवर्द्धन इस प्रकाशन के लिए बधाई के पात्र हैं।

इस कविता पुस्तक के पूर्व श्री सिन्हा की कई और काव्य पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं, जिनमें "अब बहु से सब जन हिताय" (गाँधी-काव्य) तथा "टटका आदम" आदि उल्लेख्य हैं। स्व० सिन्हा ने अँग्रेजी में भी कविताएँ लिखी हैं। यह हिन्दी और अंग्रेजी काव्य का दुर्भाग्य है कि स्व० सिन्हा जैसी प्रतिभा असमय ही काल कवलित हो गईं।

यह मेरा परम सौभाग्य रहा कि मैं स्व0 सिन्हा की साहित्य यात्रा का सहयात्री रहा हूँ। इनके काव्य पुस्तकों की पंक्तियों को कई-कई बार स्व0 सिन्हा के मुख से सुनने का सौभाग्य मिला है। "गाँधी गाथा" को नाट्यमंच पर भी अवलोकन करने का सुअवसर मिला है। यह भी सुखद संयोग है कि मैंने ही प्रथम-प्रथम स्व0 सिन्हा के सभी काव्य-पुस्तकों पर प्रायः लिखा है। अतएव आज 'आगन्तुका' के लिए "आमुख" लिखने में अह्लादित हो रहा हूँ। स्व0 सिन्हा ने आलोचना पुस्तक "प्राथमिकी" के साथ हिन्दी साहित्य में प्रवेश किया। यह ग्रंथ मौलिक गवेषणा के लिए प्रसिद्ध रहा। इसी आलोचना ग्रंथ की अगली कड़ी के रूप में अन्य ग्रंथों के साथ-साथ कथा-कहानियाँ, उपन्यासिका, काव्य और कविताएँ प्रकाशित हुईं।

"आगन्तुका" का प्रकाशन उनके निधन के कई वर्ष बाद हो रहा है। इस काव्य की पृष्ठभूमि वस्तुतः "टटका आदम" है। "टटका आदम" को मैंने आस्था का काव्य कहा था, जबकि इसकी तुलना में उसी वर्ष, यथा सन् १९६६ अगस्त में, प्रकाशित स्व0 कवि राजकमल चौधरी के काव्य "मुक्ति प्रसंग" को मैंने अनास्था का काव्य कहा था।[1] यह भी एक अजीब संयोग है कि ठीक अठारह वर्ष बाद अगस्त में ही आगन्तुका मेरे सामने है, जिसमें "टटका आदम" की परिकल्पना की झाँकी दिखायी पड़ रही है—

> "जागा एक लव और कुश है।
> न दुख, न अंकुश है।
> मेरा जो खुश है॥"
>
> (पृ0 ४१)

इसके पूर्व आज के आदमी की विशेषताओं का उल्लेख करता हुआ कवि कहता है —

> "जहाँ में कैसा यह आदम आया है,
> देखो, बहुत कुछ लाया है,
> ट्राजिस्टर कंधे पर
> गले में कैमरा है
> नयन पर ऐनक
> उजाले में अंधेरा है,
> वायनाकुलर,

१– बिहार का साहित्य और साहित्यिक मानमूल्यों की प्रेरणा, पृ0 ३६ प्रकाशक, बिहार ग्रंथ कुटीर, पटना।

दूर होता निकटतर
आवाज गरूड़वादी है
किसी मूरत से न की शादी है
सिर पर है सींग
मुख में है डींग
भोला, चोला सब बदलवा लाया है
जहां में कैसा यह आदम आया है
संस्कृति को हजम कर खाया है
केवल हड्डी पर जी अटकाया है
मजहब ! नाम पर ही घबराया है
बस चाहिये कबाब
नित्य हूर लाजवाब
अविरल शराब
इंसानियत को इसने झुठलाया है . .
जहां में यह फाल्स आदम आया है . .
जो दुखाया है . .
यह जो आया है . . "

(पृ० १२)

चूंकि कवि आस्थावादी है अतएव ऐसे इंसान से इन्कार करता हुआ वह "लव" और "कुश" ऐसा आदमी चाहता है और कहता है —

" श्रमवानो !
इंसानों ! !
तेरी ही गाथा गाने कवि आया है ! "

लेकिन इस प्रसंग में आज के मानवीय क्रिया कलाप के प्रति संग्रह में यत्र-तत्र कवि का असंतोष, व्यंग्य और आक्रोश मुखर है —
" हर जन सलूक करता है मनिस्टर सा "

(पृ० ४२)

इसलिए इस स्थिति से निजात पाना आवश्यक है . स्व० सिन्हा ने " गांधी काव्य " की व्याख्या में एक स्थान पर लिखा था—
" भविष्य में काव्य नहीं लिखूंगा , हां, विस्फोट हो गया है . " ।

इस संकल्प के बाद भी स्व० सिन्हा का काव्य सृजन चलता रहा, जिसका प्रमाण " टटका आदम " और फिर "आगन्तुका" है। " आगन्तुका " तक की यात्रा पूरी करते-करते कवि के चिंतन में एक परिपक्वता आ गयी थी । ऐसी अवस्था में कभी-कभी भाषा अटपटी हो हो जाती है । विशेष रूप से ऐसे कवि जो अध्यात्मिक साधना में लगे रहते हैं उनकी काव्य चेतना भाषा की ऐसी अटपटी अभिव्यक्ति करने लगती है । हिन्दी में कबीर इसके उदाहरण हैं । " आगन्तुका " के प्राक्कथन में कवि कहता है —

'लगन कर सबल .
नयन रख सजल . .
जगत लख सकल .
अनल भर सदल . .

(पृ० १)

" लगन साधना का द्योतक है, "

" नयन-सजल " करुणा का द्योतक है,

" जगत-सकल " वसुधैव कुटुम्बकम् का प्रतीक है,

" अनल- सदल " शक्ति और उर्जा की ओर इंगित करता है। स्व० सिन्हा देहावसान के पूर्व साधना की चरमावस्था में पहुँचने लग गये थे। इसीलिए "निरूपण" शीर्षक कविता में उन्होंने कहा—

" राम बहु मंगल मंत्र है .
ईश बड़ा सघन शब्द है . .
सारी प्रगति आबद्ध है . .
सर्वोत्तम का प्रतीक है .
दिव्य, भव्य यह सटीक है . . "

(पृ0 ३)

महामहोपाध्याय स्व० पं0 गोपीनाथ कविराज ने लिखा है – "साधना का उद्देश्य क्या है ? अहं को चरम तक बढ़ाना, फिर उसे चरम तक घटाना . " १

" साधना की जरूरत होती है – रिक्त करके पूर्ण करने के लिए या पूर्ण करके रिक्त करने के लिए, जिसके मूल में भगवत्-शक्ति चैतन्यकरा है " । २

उपर्युक्त कविता का आधार यही साधनावस्था है जो प्रगति और मंगल कारक है। " भगवत्-भाव को आश्रय करके पूर्ण ही

१– स्वसंवेदन- पं0 गोपीनाथ कविराज, पृ0 १६0
बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना
२– वही पृ0 १६३

कृपा करते हैं। यही भक्तिबीज है। भगवान सब में भक्तिबीज नहीं देख पाते, जिस जिस में भक्तिबीज देखते हैं उनमें आनन्द-संचार करते हैं" । ३ इसी आनन्द की अवस्था में रसोद्रेक होता है; जिसे आचार्य ,रस-अवस्था; मुक्तावस्था कहते हैं। स्व0 सिन्हा की ये कविताएँ मुक्ताबस्था की कविताएँ हैं; इसीलिए इसमें निराशा नहीं है। केवल आज की भयावह, विचित्र, विद्रूप स्थिति का चित्रण करते हुए मंगल कामनाएँ ध्यक्त है, जो आज के कवि के दायित्व का बोध कराता है। आज कवि-कर्म महज एक मनोरंजन का साधन नहीं है, इसे हम राष्ट्रीय स्थिति (नेशनल सिचुएसन) से जोड़ा करते हैं। स्व0 सिन्हा ने इस बृष्टि से अपने दायित्व को पूरा किया है –

" दोहा बंद को मैं हूँ स्वर,
सूखे प्यार सरसा कर, "

(पृ0 ४)

मेरा विश्वास है कि हिन्दी संसार इस लघु पर गहन काव्य का आदर करेगा।

डॉ0 बेचन

भगवान पुस्तकालय
भागलपुर
१५ अगस्त; १९८४

३– स्वसवेदन- पं0 गोपीनाथ कविराज; पृ0 १३
बिहार राष्ट्रभाषा परिषद; पटना

कवि

❀ ४ अप्रील, १९३० को ग्राम सारामोहनपुर (दरभंगा) में जन्म ।

❀ पटना विश्वविद्यालय के अग्रणी छात्र, प्रवेशिका से स्नातकोत्तर कक्षा तक। छात्र-जीवन में ही दैनिक "आज" एवं अन्य पत्र-पत्रिकाओं में सारगर्भित लेखों का प्रकाशन ।

❀ सी0 एम0 कॉलेज, दरभंगा एवं बाद में रांची कॉलेज, रांची में अंग्रेजी के प्राध्यापक ।

❀ १९५२ में भारतीय आरक्षी सेवा (I. P. S.) में नियुक्त ।

❀ अधिकारी के रूप में : सहायक आरक्षी अधीक्षक, सासाराम (१९५५-५६), समादेष्टा, बिहार सैन्य पुलिस, २, डिहरी-ऑन-सोन (१९५७-५८) आरक्षी अधीक्षक, चम्पारण (१९५८-६३) संस्थापक समादेष्टा, बिहार सैन्य पुलिस, ८, पटना (१९६४-६५), आरक्षी अधीक्षक, भागलपुर(१९६५-६८), रेल आरक्षी अधीक्षक, मुजफ्फरपुर (१९६८-७०), वरीय आरक्षी अधीक्षक, रांची (१९७०-७१), आरक्षी उप-महानिरीक्षक तथा सदस्य-सचिव, बिहार आरक्षी हस्तक पुनरीक्षण समिति, पटना (१९७१-७२), मुख्य सुरक्षा पदाधिकारी, राष्ट्रीय कोयला विकास निगम (N. C. D. C.), रांची (१९७२-७४), आरक्षी उप-महानिरीक्षक, केंद्रीय क्षेत्र, पटना (१९७४-७७) एवं दिनांक ७ नवम्बर, १९७९ को सेवारत रहते हुये असामयिक निधन तक अपराध अनुसंधान विभाग (विशेष शाखा) में आरक्षी उप-महानिरीक्षक ।

❀ उत्कृष्ट आरक्षी सेवाओं के फलस्वरूप १९७१ में भारतीय पुलिस पदक एवं १९७९ में राष्ट्रपति पुलिस पदक से सम्मानित ।

❀ हिंदी साहित्य-जगत के विख्यात आलोचक एवं लेखक । आलोचना-साहित्य में सर्वथा नवीन ग्रंथ "प्राथमिकी" का १९६५ में प्रकाशन । इसके बाद इसी विधा में "आज तक की" का लेखन एवं प्रकाशन । "मैना के उलझ गये डैना" के उपन्यासकार ।

❀ १९६६ में आधुनिक हिंदी कविता में मौलिक कृति 'टटका आदम' का प्रकाशन । इसी वर्ष महात्मा गांधी के जीवन पर आधारित अप्रतिम काव्य "अब बहु से सब जन हिताय" का प्रकाशन ।

❀ अंग्रेजी में बापू के जीवन को " MAN THOU CAN " के रूप में काव्य-बद्ध किया। इस महत्त्वपूर्ण ग्रंथ का १९८२ में कवि के ज्येष्ठ पुत्र श्री आनन्दवर्द्धन सिन्हा, आई० ए० एस० द्वारा प्रकाशन। अंग्रेजी में अपने ढंग का पूर्णतः नूतन कार्य।

❀ छात्रों की समस्याओं पर "STUDENTS' REVOLT" नामक पुस्तक के लेखक।

❀ १९७६ में उत्तर-प्रदेश सरकार द्वारा अपराध-शास्त्र पर हिंदी में प्रथम मौलिक पुस्तक "आपराधिकी" के लिये विशेष पुरस्कार से सम्मानित। इस ज्ञान-ग्रंथ को १९७८ में बिहार राष्ट्र भाषा परिषद् द्वारा "वर्ष की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक" पुरस्कार प्राप्त हुआ।

❀ विभिन्न राष्ट्रीय संगठनों एवं संस्थाओं में महत्त्वपूर्ण विषयों पर व्याख्यान।

❀ एक अध्यात्मवादी एवं मानवतावादी।

कविता-क्रम

क्र० सं०	कविता	पृष्ठ सं०
१	प्राक्कथन	१
२	वंदन	२
३	निरूपण	३–५
४	दसानन	६–९
५	अंकन	१०–२४
६	उद्बोधन	२५–२९
७	अवतरण	३०–३३
८	अभिनंदन	३४–३८
९	शमन	३९–४१
१०	लोग रोग योग	४२–४६

प्राक्कथन

झट कह जब लख।
तब मत कथ रख॥
जग जग कर रह।
लग लग कर कह॥

लगन कर सबल।
नयन रख सजल॥
जगत लख सकल।
अनल भर सदल॥

उग नत शतदल।
जग जन इस तल॥

वंदन

जयति जय राम हे।
जय लोभ - धाम हे।
विजय अभिराम हे।
जय पूर्णकाम हे।
जय जग ललाम हे।
जय सत्य काम हे।
जय काव्य-याम हे।
जय कवि, कलाम हे।
जयति जय राम हे।
जय दिवा - शाम हे।
जय ईश नाम हे।
जयति जय राम हे।

निरुपण

राम बहु मंगल-मंत्र है ।
ईश बड़ा सर्धन शब्द है ॥
सारी प्रगति आबद्ध है ॥
सर्वोत्तम का प्रतीक है ।
दिव्य, भव्य यह सटीक है ॥

सत्य, शिव, सुन्दर अभिराम ।
मनसा, बाचा है ललाम ॥
तेज-पुंज, विश्व-छवि - रूप ।
मानवी कल्पना अनूप ॥
इसके हैं पर्याय अनेक ।
विविध गीतों का इक टेक ॥
इसका न विज्ञान विरोध ।
इस लक्ष्य का ही वह शोध ॥
गूढ़, अगोचर, गहन अर्थ ।
प्रकाश समान पर समर्थ ॥
सुंदर हुआ नित साकार ।
इसने जब लिये अवतार ॥
एक नहीं पर बारम्बार ।
निचोड़ा है अमृत सार ॥
हर युग में कर प्राण - संचार ।
हलका किया भव का भार ।

जिह्वा न थकी, न गति रुकी ।
न वाणी की तरंग झुकी ॥
गाये गीत बारम्बार ।
न होगा ही पाराबार ॥
हर युग की व्याख्या होगी ।
संततियां जड़ता खोंगी ॥
महाकवियों को नमस्कार ।
वाल्मीकि - सम टीकाकार ॥
तुलसी, कम्ब करूं प्रणाम ।
कृतीवास नमन निष्काम ॥
निज युग को देता वाणी ।
गाता जा सम - सह प्राणी ॥
करता हूं मैं अगवानी ॥

द
सा
न
न

मेरा जी बेहद उदास है ।
दसानन का इतिहास है ।
फंदा है, विकट फांस है ।
रूठा निखिल आकाश है ।
जल गई सारी घास है ।
अक्षुण्ण न स्वल्प पास है ।
दस मुख का हुलास है ।
मेरा जी उदास है ।

दस मुखों का अट्टहास है ।
हर मुख का गुण निरा खास है ।
एक कहता पर करता नाश है ।
दो निगलता सिर्फ विलास है ।
तीन करता कटु परिहास है ।
चौथा बांटता विश्वास है ।
सच, जो अन्ध ही अधिकांश है ।
पंचम को न भूख न प्यास है ।
कारण इकठ्ठा सबांश है ।
षष्ठ के लिये लोग ग्रास है ।
चूंकि यंत्र, तंत्र बहुलांश है ।
सप्तम को रुधिर - अभिलाष है ।
नवम उगलता सर्वनाश है ।
दशम में विस्फोटक ह्रास है ॥
जी बहुत उदास है ।
दसानन पास है ॥

दसानन बड़ा ही तगड़ा है ।
खूंख्वार भयानक जबड़ा है ।
नर न अभी कोई संबरा है ।
इसीलिये यह अड़ा, खड़ा है ।
नियति पर सभी दोष जड़ा है ।
भाग्य से ही जन नित लड़ा है,
अंग भले ही कटा, खड़ा है ।
नरक आज बसुन्धरा है ।
बदला न इतिहास ।
मेरा जी उदास ॥
सत्य नहीं, विरोधाभास है ।
मेरा जी बेहद उदास है ।
आस की भी न रही आस है ।
नारी पूज्य । अब बकवास है ।
नारी भोग्या के लिपाश है ।
शिशु धरती का बोझ, फांस है ।

कविता करनी का सर्वनाश है ।
त्याग नहीं राज का भाष है ।
नं धरती तप का आवास है ।
बोल निरर्थक उच्छ्वास है ।
बदला न इतिहास ।
मेरा जी उदास ॥

अंकन

जंहा में कैसा यह आदम आया है,
देखो, बहुत कुछ लाया है।

भरता चुस्त कदम
यह भारी भरकम
ट्रांजिस्टर कंधे पर
गले में कैमरा है
नयन पर ऐनक
उजाले में अंधेरा है।
बायनाकुलर ।
दूर होता निकटतर
आवाज गरूड़वादी है
किसी मूरत से न की शादी है
सिर पर है बींग
मुख में है डींग
झोला, चोला सब बदलवा लाया है
जहां में कैसा यह आदम आया है
संस्कृति को हजम कर खाया है
केवल हड्डी पर जी अटकाया है
मजहब। नाम पर ही घबराया है
बस चाहिये कबाब
नित्य हूर लाजवाब
अविरल शराब

हाथ मिलायेगा
इसके घर कोई जब आयेगा
यहीं है इसका आदाब ।
सुरसा-सा बदन को ही बढ़ाया है
जहां में यह फाल्स आदम आया है ॥
नकली बोल
कृत्रिम चाल
अनंत आंत
नकली दांत
अपने शरीर में भर लाया है
जहां में ऐसा ही आदम आया है
अस्थिर बोल
बस द्रव्य है मोल
हाजीर जवाब
यह जनाब
इंसानियत को इसने झुठलाया है ॥
जहां में यह फाल्स आदम आया है ॥
जी दुःखाया है ॥
यह जो आया है ॥

श्रमवानों ।
इंसानों ॥
तेरी ही गाथा गाने कवि आया है ।
देखो, तस्वीर मुखर यह लाया है ॥
गुरू हूँ, शिक्षक हूँ
मास्टर हूँ
प्रोफेसर हूँ
जिन पुस्तकों के प्रणयन से
आदम ढलते मेरे आलय में
जिन्हें मैं मशीनवत दुहराता हूँ

तिहराता हूँ। चौहराता हूँ
अनंततः बकता जाता हूँ
बदले में अनादर पाता हूँ
जब बड़े अफसर
मोटे सौदागर
नामी वशंधर
तो नहीं मिलता वर
आ जाता हार, थककर मेरे घर
और मेरे सीधेपन की दुहाई देकर
देता बाँध निज कन्या जीवन भर
वह कन्या
जो रूप से न होती धन्या
न जो विधावती होती
पर जो संतति ढोती
मैं काव्य लिखता
जो नहीं बिकता
पर जब मैं भाषण लिखता
वह नेता से बंटता

नाम उनका बढ़ता
गैं बदनाम
उठती पीढ़ी करती कुणाम।
मेरी सूखी काया पर
बंधी है सबकी नजर
तनती है बंदूक
छूटती वह सत्वर
मैं ढेर।
मेरी टेर॥
अंधेर, अंधेर ॥।

II

मजदूर ।
मेहनत करता भरपूर ।
पर अर्थ में मजबूर ।
न किसी का नूर
"सलम" कहाता मेरा पुर
रहती वहीं मेरी हूर
फुदकते हैं बच्चे जरूर
पर भविष्य जिनका चकनाचूर ।
मैं वही मजदूर
पैर दौड़ाता

हाथ चलाता
जी लपलपाता
चक्का घुमाता
बीम वरभा उठाता
रोलर लुढ़काता
नाला बहाता
आग खौलाता
कल - पुर्जे घर्राता
पत्थर, रोड़ा चमकाता
खुद पिस जाता
घिस जाता
सपनों में ही दब जाता
जग से कूच कर जाता
मजदूर
मजबूर
चकनाचूर

हूँ मैं किसान
पर नहीं इन्सान ।
बदल गया है प्रमाण ॥
जिसमें ईमान
वह है अब हैवान् ।
जो निरा धनवान्
वही है इन्सान
जो करता अन्नदान
वह है हैवान
मैं वही किसान ॥।
फावड़े उठाता ,
राम - नाम गाता ,
देह से नेह बरसाता
बंजर सरसाता ,
अंकुर उगाता ,
फल, अन्न लाता ,
बिलकुल सुलझा ज्ञान

मैं हूँ किसान ।
सबै भूमि गोपाल की
आल की , औ बाल की ॥
यही है परम ज्ञान
जो जोतता वही करता बलिदान् ।
गाओ सकल जहान
जय किसान, जय इंसान ।

सुबह करता हूँ स्नान ।
फिर थोड़ा सा ध्यान ॥
पढ़ता हूँ मंत्र घमासान
पाता हूँ पाखंडी का सम्मान ।
ढोंगी, मूर्ख, अज्ञान ॥
मेरे विशेषणों की खान ॥
दिन में कहीं हूँ दरबान ॥
कहीं हूँ रसोइया महान
यही है समाज का विधान ।
मैं करता हूँ ईश गुणगान
जब द्रव्य देता कोई विद्वान
मनोरथ मनाता धनवान् ॥
उतरो भू पर भगवान्
या हो जाओ नर नारायण समान

III

लिपिक
कलम का श्रमिक ।
चलता फिरता एक कार्टून ।
इच्छाएं मेरी भ्रूण ।
आंखे धंसी हैं
दांत झड़ गये हैं,
बाल पक गये हैं
चमड़ी लुढ़क गई है
आंत लमड़ गई है

भावना जकड़ गई है
लालच पकड़ गई है
पैसे की लालच
जैसे हो वैसे पैसे पाने की लालच
इसमें ही जान बच गई है
दफ्तर पहले आता हूँ
बाद में जाता हूँ
प्रिया के पास लाता हूँ
जो कुछ कमाता हूँ
बच्चा जनमाता हूँ
फाइल में प्राण बसता है
साहब में भाग्य हंसता है
कलम सेवता हूँ दिन - रात
कलम ही मेरी बिसात
कलम । मेरी भी जय बोल
लेखक बंधु कर मेरे हित भी किल्लोल ।

विद्या नहीं पढ़ी है ।
पढ़ी है तो संपत्ति नहीं गढ़ी है ।
दर दर खा ठोकर
बन गया हूँ नौकर ।
वर्तन धवल करता
पर - तन सबल करता
गुदड़ी में गुजर करता
लात , बात सब सहता
दूसरा तो निकल पड़ता
पर मैं ठिठका ही रहता
बस भर पेट रोदन करता
क्यों सहता रे क्यों सहता
क्यों दहता रे क्यों दहता
संग चलो , देखो
सब अब है कमर कसता ॥
कवि , गुरू , मास्टर , प्रोफेसर ,

किसान ,   मजदूर ,
लिपिक ,   पुजारी
सब नर,   सब नारी ॥
सब की आई है बारी ॥
हे नटवर, हे जगधारी ॥
हे पुरूष ।   हे नारी ॥
हे सकल सृष्टिकारी ॥
हे सत्य के पुजारी ॥
हे सुंदर ।   हे बिहारी ॥
हे शिव के अभारी ॥
हे पुरूष ।   हे नारी ॥।

उद्‍बोधन

एक करूण चीत्कार आ रही है ।
अटपटी , भिटपिटी बुला रही है ।
उठो साथी । भैरवी जगा रही है ।
बेचैनी रग - रग में पगा रही है ।

महल के बगल में बिछे डगर पर,
मैले, कुचैले, बस, पसलियां भर,
धराओं पर जुटे जो नारी-नर,
अधखिली, चूसी निज देह लेकर,
जन्तु - सरीखे विस्मय दिखाकर,
अवसाद-हेतु, नियति दोष देकर,
न हमें, न तुम्हें अपशब्द कहकर,
ढोते खुद को समय की रेत पर।

यह चीत्कार शून्य से टकरा रही है,
चीत्कार कर्ण में दर्द बिखरा रही है,
चलो साथियों भैरवी जगा रही है,
रूधिर को बेचैनी खलबला रही है।

विज्ञान के सब साधकों सुनो तुम,
दंभ तुममें, विश्वामित्र बनो तुम,
संकल्प लो कि नये वसन बनो तुम,
नये खाद्य नये अन्न रचो तुम।

सारी ताकत डगमगा रही है,
संतति रक्त में नहला रही है,
उठो साथी भैरवी जगा रही है,
बेचैनी अब उन्मन बना रही है।

प्रशासन रथ के वाहक जगो,
सिंहासन से उतर धरती सजो,
अब नख शिख श्रृंगार को तजो,
करो सत्वर जो कुछ भी भजो।

विलास निद्रा स्वार्थ भगा रही है,
यह चीत्कार रह-रह आ रही है,
उठो साथियों, भैरवी जगा रही है,
बेचैनी विपथगा अब सजा रही है।

पसलियां सभी बिखर पड़ेंगी,
अधखिली जो हैं झड़ पड़ेंगी,
बाल संततियां उजड़ पड़ेंगी,
दया - हया शिला - सम बनेंगी।

प्रकृति ध्वंस, विनाश जुटा रही है,
संस्कृति निधि अपनी लुटा रही है,
उठो साथियों, भैरवी जगा रही है,
बेचैनी अब रागिनी बजा रही है।

अग्नि-बाण से धरती को फोड़ दे,
भगीरथ की सुरसरी को मोड़ दे,
रूढ़ि-कोटर-परिधियों को तोड़ दे,
नेह-डोर से भू को तू जोड़ दे।

हवा सुरभियां बिखरा रही है,
लो, उषा कुमकुम बरसा रही है,
चलो साथियों, भैरवी जगा रही है,
बेचैनी सब में आकुल छा रही है।

अन्न वसन चीत्कार आ रही है,
गुदड़ियों में विभा जगमग रही है,
उठो प्रशासकों, वैज्ञानिकों, कवियों,
चलो, अभी हैं सांस बांकी।

लेखा, लाश फड़फड़ा रही है,
भैरवी जगा रही है,
क्रान्ति आ रही है,
शांति ला रही है।

अ व त र ण

लो, विपथगा आ गई है,
चीत्कार से अंगार फूटा,
इस रूदन से टंकार छूटा,
मूरत, कौन कौमार्य लूटा ?
दंत-भक्षित नख-व-शिख टूटा।

मत मुख खोल रमणी, विदित है,
मिट्टी अंकनों में लिखित है;
कुन्तल - राशि नोची गई है,
कटि की गांठ खोली गई है।
नरेशों को, जनेशों को जा कह,
नयन कालिख धोयी गई है,
प्रशासकों, विधायकों, आओ,
रचित तेरी विधि तोड़ी गई है।
ऐ पंडित, ऐ मुल्ला, देखो,
कोमल त्वचा फोड़ी गई है,
ओ चोर, चोर, ओ, चोर, चोर,
ऐ सुनो, शोर है बड़ा है जोर,
ऐ काला चोर, ऐ हरामखोर,
तज अकड़, बच थोड़ी गई है,
चलो आका, अब चलो बाबा,
अरे तूफां, आ देखो, यहां,
नारी दलित छोड़ी गई है।

चलो जल्दी, इसी पथ से,
क्रांति-पौरुष की जोड़ी गई है,
वह क्रांति कैसी ? क्रांति ऐसी।
अगोचर पवन-सम, अनुभव-क्षम,
निराश्रय, निरुपाय, निरीह को,
रखती जो जीवंत अधिकतम,
और जब राज में, समाज में,
घुन लगती और नीति मरती,
बर्बरता बहु हुमर्द करती,
मानवता चुप आहें भरती,
बस क्रांति धमक आ पड़ती,
पहले कहीं तो यह गरजती,
फिर बाद में सबकों समेटती,
विकल नागिन फुफकार करती,
विषमता तभी उस पल मरती,
सभी ईमारत खाक बनती,

आंचल में इसके लौ पलती,
औ मनुजता श्रृंगार करतीं,
नवल सृष्टि, नव विधान रचती।
किरणें बिछाती यह सूर्य - सम,
देती मिटा तब सब ताप - तम,
अगोचर पवन-सम अनुभव-क्षम।
कैसा सहगामी - पौरुष है,
हिमालय - सा उसका वक्ष है,
आंकता निखिल को गवाक्ष है,
मूठ में कल्प, हद प्रशस्त है,
नहीं द्वेष, नहीं कलेश जन को।
मंगल सब का रहा लक्ष्य है,
तपा हुआ दीप्त तन, महाबल,
मेरुदंड सीधा उन्मुख है।
चलो आका, चलो काका अब,
कल्याण प्रगति सब सम्मुख है,
ऐसा सहगामी - पौरुष है॥

अ
भि
नं
द
न

सेनानी संग आईं भवानी।

दंडक बहु विविध निपुण अचूक है,
कठोर बज्र है, निरा निर्भय है,
दोष निरूपण में कटू निर्दय है,
ममता निगोड़ीसदैव मूक है।

कारण यह दंडक है ज्ञानी,
सेनानी संग आई भवानी।
बड़ा सुरागी सबल गुप्तचर है,
नहीं कोई सहचर न अनुचर है,
बूंद न रहा कभी दृग - कोटर है,
खुला रहा जिसका कान सुधर है।
बलबीर प्रहरी, पुरूष प्राणी,
सेनानी संग आई भवानी।
मंत्री बिलकुल ही तपः पूत है,
इसको परदुख पूर्ण अनुभूत है,
बल्कल वस्त्र है औ कथ अस्त्र है,
कार्यान्वयन उस कथ का सबूत है।
कभी न आनी, है यह कल्याणी,
सेनानी संग आई भवानी।
प्रशासन-सारथी बस तेज पुंज है,
आलस्य, मदिरा, द्रव्य अजान है,
असत्य ओट में न परित्राण है,
सेवा अटूट आनंद - कुंज है।

हद में करूणा, नयनों में पानी,
सेनानी संग आई भवानी।

जन-जन में लबालब मनोबल है,
प्रशासन से आगे वह सुदल है,
इनमें हलचल, उनमें खलबल है,
जन-जन का मुख नित गर्वोज्वल है।

अब नहीं पड़े भी शिथिल रवानी,
सेनानी संग आई भवानी।

ले करों में पौरूष तकदीर आया।

नदी है भरी अब लता भी है लदी,
करिश्मा इसने अनेक कर दिखाया,
गिरि से सरिता अरू सागर से अमृत,
अग्नि से बाण, वायु से प्राण लाया।

दे बुद्धि को पौरूष तदवीर आया,
ले करों में पौरूष तकदीर आया।

शोषण की पुरानी रीढ़ है तोड़ी,
दोषारोपण की सब जड़ है कोड़ी,
औ झंझावेग से जख्म है फोड़ी,
कहीं होली, कहीं गाई है लोरी।

काल से जो जीवन को छीन लाया,
ले करों में पौरूष तकदीर आया।

जहां बालू, वहां छिटकी हरियाली,
जहां सूखा, वहां तर है हर प्याली,
जहां भूखा, वहां है मांसल लाली,
जहां खोटा, वहां है अब सब आली।

कब्र से कर जिन्दा इन्सान लाया,
ले करों में पौरूष तकदीर आया।

कलम से नित अकाट्य वाक्य लिखकर,
कदम से झट अगम्य पंथ तैकर,
भुजा से अन्याय की जड़ चुनकर,
मुख से स्वर्गांभलेय भजन कर।

रूप है असली अब अनुज ने पाया,
ले करों में पौरूष तकदीर आया।

श
म
न

विभीषिका जा चुकी है।

हर विभीषिका,
रण विभीषिका,
शोषण विभीषिका,
पराये पर पोषण विभीषिका।

विपथगा खा चुकी है,
विभीषिका जा चुकी है।

भ्रांति चांडालिका,
अशांति कापालिका,
विश्रांति मृगमालिका,
क्लांति पाशविका।

विपथगा खा चुकी है,
विभीषिका जा चुकी है।

काम - पिशाचिका,
अर्थ - अभिसारिका,
पिपासा शासिका,
टोह मारती नासिका।

विपथगा चुग चुकी है,
विपथगा खा चुकी है।
विभीषिका जा चुकी है,
क्रांति शांति ला चुकी है।

मधु - वर्षण

सब ओर उल्लास है।
सांस है, शुचि हास है॥
मेरा जी अनहद खुश है।

आये हैं राम।
आई हैं भवानी॥
साथ सेनानी॥

जागा एक लव औ कुश है।
मेरा जी अनहद खुश है॥

न दुख, न अंकुश है।
मेरा जी खुश है॥

लोग : रोग : योग

यहां के लोग,
कर रहे हैं भोग,
बड़ी बड़ी कोठियां,
नान की रोटियां,
न हर्ष है न शोक,
यहां के लोग। (१)

चढ़ते हैं कल्पना की चोटियां,
पहनकर खद्दर ओ मोटियां,
गिर रही हैं तन से बोटियां,
बढ़ रहा है रोग,
यहां के लोग,
चिपकें हैं जोंक। (२)

हर जन सलूक करता है मिनिस्टर-सा,
चाहता है जोड़ना किस्मत फूटा कनिस्तर-सा,
छा रहा है आतंक मन में भाग्य शनिचर-सा,
अब कौन जुगती, कौन जोग,
यहां के लोग (3)

(पटना-शिविर, 17-3-67)

बंदनी घर में है।
सत्ता रहती न अंदर है,
सत्ता बाहर है,
सत्ता न व्यक्ति में है,
सत्ता समष्टि में है। (४)
सत्ता न एक में है, न अनेक में है,
सत्ता तब कहां है ? सत्ता प्रत्येक में है
सत्ता न आस में है, न विश्वास में है।
सत्ता जीती तो हर सांस में है॥

तोड़ दे गिरि को,
फूट पड़ी है सरिता,
हमें न चाहिए संग्राहालय,
जहां हम रखते प्रतिमा,
वर मांगकर, भस्मासुर बनकर,
छलती हमें वह अननिता,
पेड़, पौधे, पेय, प्रातः सुलभ है,
चाहिए न बर्णक कविता,
लौटा दो मेरी प्रतीति,
रहेगी मेरे साथ यह सदा।

यह दनुज को भस्म करेगी ,
यों तो पड़ी रहेगी यह निर्लिप्ता ,
कली में मुस्कान, अलि में शान ,
पद्म खिलायेगी यह दीप्ता ,
चेतन करेगी उन सब को ,
जिनकी धमनियां हैं सुप्ता ।
घन जिमि बरसे, प्राण जिमि सरसें ,
तिमि वर देगी यह उन्मुक्ता ,
तूर्ण में रहेगी तीर ,
बिंध देगी असुर हो प्रकटिता ,
निधि रहेगी मेरे पास ,
प्रतिनिधि न बनेगी अखंडिता ।
सूर्य है बस आराध्य ,
आराध्या है यह सविता ,
तोड़ दो, फोड़ दो, कोड़ दो, छोड़ दो ,
अजर अमर है हम और हमारी सरिता,
लौटा दो मेरी प्रतीति,
अब न कोई निमित है , न नमित्ता ।
(14-3-67, 3 बजे रात्रि)

बहुत सुने हम मंत्र ,
बहुत देखे हम यंत्र ,
बहुत चमत्कार तंत्र ,
पर रहे हम परतंत्र ,
मुझे प्यारी है मेरी मानवता ,
मानवता ही बस है सत्ता ,
न प्रतिमा में, न कक्ष में, न आलय में,
अब बंदिनी बनेगी सविता ॥
तम तो ढल गया है ,
ब्रह्ममुहूर्त भी बीत रहा है ,
उषा जा रही है ,
आरती सजाओं हे नर, हे नारी ,
मालिका पहनाओं हे सुकुमार, हे सुकुमारी,
अंगड़ाई लख रहा हूँ मैं ,
पदचाप सुन रहा हूँ मैं ,
पास है उदिता ,
निकट है आगन्तुका ॥
शंख फूँक रहा है कवि ,
अरू स्पष्ट हैं निनादिता ॥
(3-30 बजे रात्रि)

लोल लहरियां लहर लहर उठती मेरे
मानस पर ,
लघुता जड़ता कलुष विषम छवि धरती
कीचड़ धोकर ,
उठता है इतिहास, नाच तब फिर खुद
मांसल होकर ,
विकल चेतना की काया छा जाता है
कनलुस पर ।

बायें कर में दंड भयावह ,
दायें में आशीष जुगाकर ,
आंखों के बहु चित्र लेखे अरू,
देह मोम सा पिघलाकर ।

वासना साधना में करता ,
भावना विवेक जलाकर ,
दे रहा बंद को मैं हूँ स्वर ,
सूखे प्यार सरसाकर ।